आज़ाद फाउण्डेशन

आज़ाद परिंदे

न्यूज़लेटर (सीमित वितरण हेतु) आज़ाद फाउण्डेशन, वर्ष 2024 अंक 22

हमारी गाड़ी, हमारी पहचान: सुरक्षित और समावेशी शहरों की दिशा में!

संपादकीय

भारत में सुरक्षित और समावेशी शहरों का निर्माण

भारत तेजी से शहरीकरण की ओर बढ़ रहा है, जहाँ 34% से अधिक आबादी अब शहरों में निवास करती है (भारतीय राष्ट्रीय जनगणना, 2011)। यह शहरी विकास अवसरों के साथ आता है, लेकिन असमानताओं को भी उजागर करता है। भारत के शहरों की हलचल भरी सड़कों में, जहाँ ऊर्जा है, वहीं असुरक्षा और बहिष्करण भी विद्यमान है, खासकर हाशिए पर मौजूद समूहों के लिए। यह स्पष्ट है कि हमारे शहर उतने सुरक्षित और समावेशी नहीं हैं जितने उन्हें होना चाहिए।

महिलाओं के लिए यह खतरा विशेष रूप से गंभीर है। 2015 में थॉमसन रॉयटर्स फाउंडेशन ने दिल्ली को महिलाओं के लिए सबसे खतरनाक मेगासिटी बताया (थॉमसन रॉयटर्स फाउंडेशन, 2015)। 2024 में यूथ की आवाज़ द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण में 56% शहरी महिलाओं ने सार्वजनिक परिवहन में यौन उत्पीड़न का अनुभव किया (यौन उत्पीड़न पर यूथ की आवाज़ सर्वेक्षण)। 88% महिलाओं ने सार्वजनिक परिवहन में खुद को असुरक्षित महसूस किया (यूएन विमेन, 2017)।

शहर विकलांग व्यक्तियों के लिए भी दुर्गम हैं। बाधाओं से भरे फुटपाथ, रैंप की कमी, और अपर्याप्त सार्वजनिक परिवहन चुनौतियाँ उत्पन्न करते हैं। ट्रांस

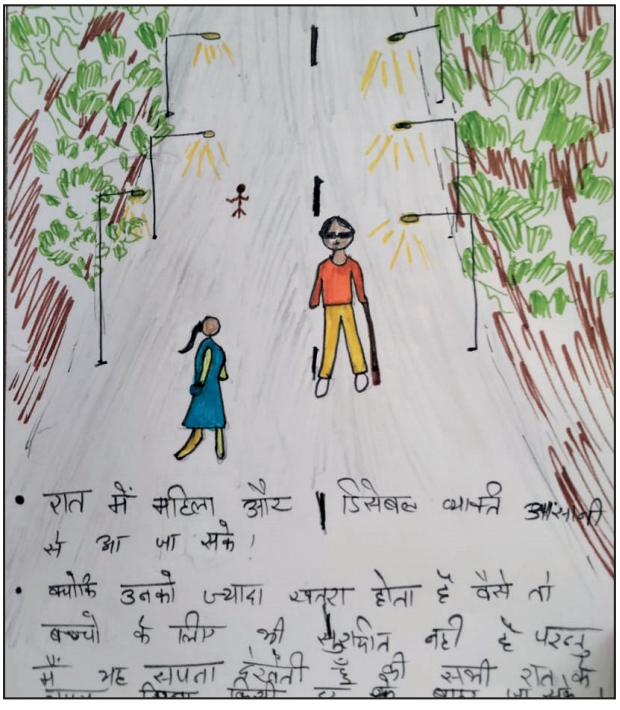

पारवती, फेमिनिस्ट लीडर, नार्थ दिल्ली

और गैर–बाइनरी व्यक्तियों के लिए भी असुरक्षा और बहिष्करण का अनुभव समान रूप से गंभीर है। यह न केवल स्वायत्तता और सम्मान को बाधित करता है, बल्कि आर्थिक अवसरों और सामाजिक भागीदारी पर भी नकारात्मक असर डालता है। उदाहरण के लिए, ड्राइविंग जैसे गैर–पारंपरिक आजीविका की तलाश करने वाली महिलाओं और गैर–बाइनरी व्यक्तियों के मामले पर विचार करें। अच्छे वेतन और स्वतंत्रता की संभावनाओं के बावजूद, कई लोग सुरक्षित सड़कों और सार्वजनिक सुविधाओं, जैसे कि स्वच्छ और सुलभ शौचालयों की अनुपस्थिति से हतोत्साहित होते हैं। इसके परिणामस्वरूप, भारत की आबादी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा कार्यबल से बाहर रहता है, जो बदले में गरीबी और निर्भरता के चक्र को बनाए रखता है, जिससे शोषण और हिंसा में वृद्धि होती है। यह बहिष्कार न केवल व्यक्तियों को उनकी स्वायत्तता और सम्मान से वंचित करता है, बल्कि हमारे राष्ट्र की सामूहिक प्रगति को भी बाधित करता है। यह निराशा का संदेश नहीं है; बल्कि बदलाव के लिए एक पुकार है। सुरक्षित और समावेशी शहरों का निर्माण नैतिक, सामाजिक और आर्थिक आवश्यकता है। इसके लिए सरकार, नागरिक समाज और निजी क्षेत्र की भागीदारी आवश्यक है।

शहरी नियोजन में सभी नागरिकों की ज़रूरतों, खासकर सुरक्षा और पहुंच पर ध्यान देना चाहिए। अच्छी रोशनी वाली सड़कों, सुलभ परिवहन और समावेशी सार्वजनिक स्थानों पर निवेश आवश्यक है। कानून प्रवर्तन को लिंग–संवेदनशील बनाना और सशक्त करना भी ज़रूरी है, साथ ही भेदभाव और हिंसा के खिलाफ जागरूकता अभियान चलाना चाहिए। अंततः, नीतिगत निर्णयों में हाशिए के समुदायों की आवाज़ों को शामिल करना अनिवार्य है। एक सुरक्षित और समावेशी भविष्य की यात्रा चुनौतियों से भरी है, लेकिन यह यात्रा हमारे सभी नागरिकों के लिए एक बेहतर और समान भविष्य का वादा करती है।

आइए, हम सभी मिलकर ऐसे शहरों का निर्माण करें जहाँ हर कोई, चाहे वह किसी भी लिंग, क्षमता या पहचान का हो, प्रगति कर सके।

–मालिनी कृष्णन, सीनियर डिस्ट्रिक्ट लीड, चेन्नई

एक सुरक्षित और समावेशी शहर की परिकल्पना

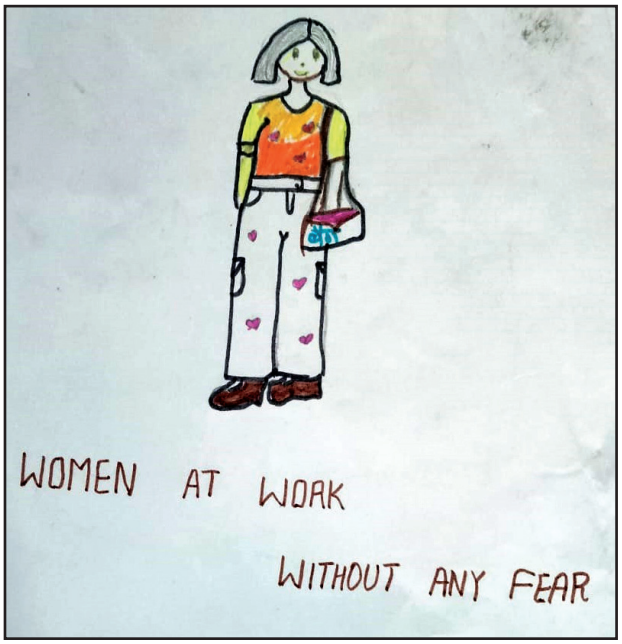

आफरीन, फेमिनिस्ट लीडर, नार्थ दिल्ली

खुशहाल शहर

एक ऐसा शहर जहां सभी सुविधाएं उपलब्ध हों। जहां "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" कहने की आवश्यकता न पड़े, बल्कि बेटियों, महिलाओं और बुजुर्गों को मान और सम्मान मिले। जहां हवा शुद्ध हो, सड़कें ठीक हों, और नालियों को नियमित रूप से साफ किया जाए ताकि गंदा पानी बाहर न निकले। बसों में ड्राइवर और कंडक्टर का व्यवहार सभी के प्रति अच्छा हो। ऐसे शहर में किसी के साथ दुर्व्यवहार न हो, और हम बिना किसी डर के कहीं भी आ–जा सकें।

–अनीता, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ दिल्ली

सुरक्षित शहर

मेरा ये विचार है कि लड़कियों को बोलना आना चाहिए अपने–अपने हक के लिए। अगर उनके साथ कोई छेड़–छाड़ करे तो उसको सज़ा मिलनी चाहिए।

–नैंसी, आज़ाद किशोरी, ईस्ट दिल्ली

मेरी सुरक्षित जगह

मेरी नजर में एक सुरक्षित जगह वह है, जहां जाति और धर्म से ऊपर इंसानियत हो। एक ऐसा स्थान जहां हर व्यक्ति को समानता मिले, चाहे वह लड़का हो, लड़की, ट्रांसजेंडर, हिंदू, मुस्लिम, सिख, या ईसाई।

यहां हर कोई अपनी पसंद से कपड़े पहन सकता है और अपनी मर्जी से कहीं भी आ–जा सकता है। एक ऐसा शहर जहां सभी को शिक्षा का अधिकार हो, बिना किसी रोक–टोक के। जहां सफाई, पानी, और बिजली की कोई कमी न हो और आस–पास का माहौल हमेशा सकारात्मक हो।

–शगुफ्ता शाहीन, फेमिनिस्ट लीडर, नार्थ कोलकाता

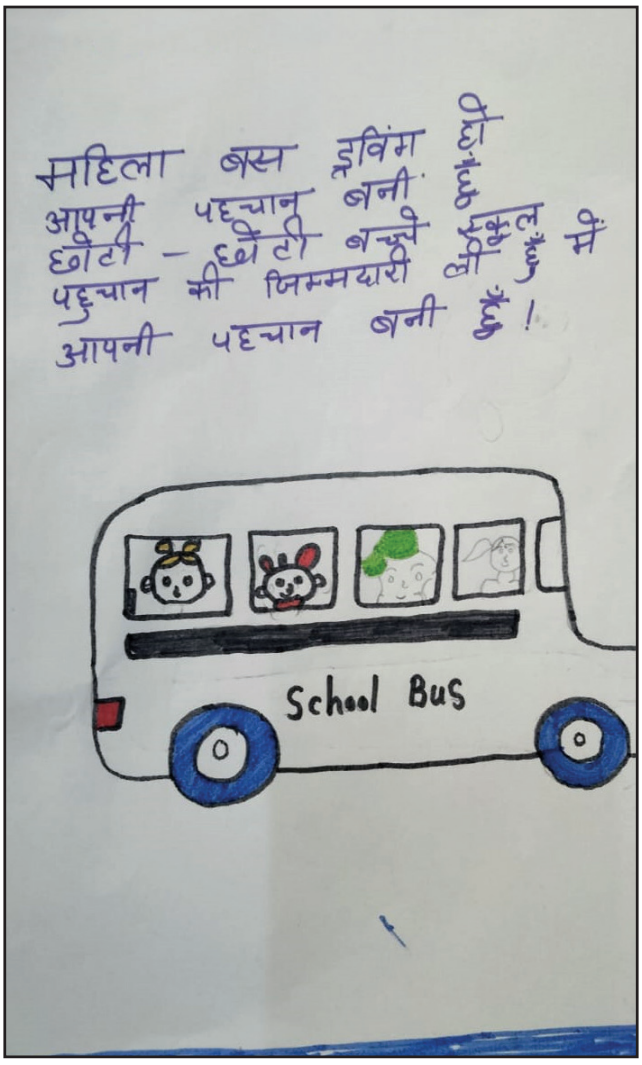

सपना, फेमिनिस्ट लीडर, नार्थ दिल्ली

एक सुरक्षित और समावेशी शहर की परिकल्पना

सपनों का शहर

मैं एक ऐसा माहौल चाहती हूँ जहाँ कोई महिला असुरक्षित महसूस न करे। जहाँ उसे यह चिंता न हो कि लोग क्या सोचेंगे। आर्थिक रूप से कमजोर होने पर भी सभी सुरक्षित महसूस करें।

कोई भी व्यक्ति जेंडर या शारीरिक बनावट के आधार पर न छेड़ा जाए, और भ्रष्टाचार का कोई नामो–निशान न हो। हर महिला अपनी पसंद के कपड़े पहन सके, अपनी पसंद का खाना खा सके, और अपनी आज़ादी का सम्मान करे। हमें ऐसा समाज चाहिए जहाँ सभी के मौलिक अधिकारों का संरक्षण हो, और बिना किसी डर के जीने का अवसर मिले।

–शमा परवीन, फेमिनिस्ट लीडर, नार्थ दिल्ली

सुरक्षित शहर की कहानी

एक शहर था सुरक्षित, खुशहाली का ख़ज़ाना,
सड़कों पर चलते लोग धैर्य से,
हर कोने में सुरक्षा की छाया।
पुलिस की नज़र थी हर जगह,
बच्चों की हँसी में था सारा जहाँ।
हर नागरिक को मिलती थी विशेषता,
सुरक्षा में था सबका विश्वास।
न कोई डर, न कोई भय,
सुरक्षित शहर, हर किसी का घर।

–हर्षित, मेन फॉर जेंडर जस्टिस, जयपुर

मोहिनी, आज़ाद किशोरी, जयपुर

सार्वजनिक स्थलों पर चुनौतियाँ

महिलाओं की सुरक्षा

महिलाओं की सुरक्षा के लिए सार्वजनिक और सुनसान जगहों पर सुरक्षा कर्मियों की तैनाती जरूरी है। ऑटो–टैक्सी में सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त जीपीआरएस हो। सेल्फ–डिफेंस की ट्रेनिंग अनिवार्य हो, और यौन उत्पीड़न रोकने के लिए जागरूकता मुहिम चलाई जाए। सुनसान रास्तों पर दिन में भी पेट्रोलिंग होनी चाहिए, और अपराधियों को सख्त सजा मिले ताकि दूसरों को सबक मिले।

–गीता रानी, फेमिनिस्ट लीडर, ईस्ट दिल्ली

रात में भी घूम सकें बेख़ौफ़

रात में महिलाएं और विकलांग व्यक्ति आसानी से आ–जा सकें, क्योंकि उन्हें अधिक खतरा होता है। बच्चों के लिए भी रात में सुरक्षा की कोई गारंटी नहीं है। लेकिन मैं यह सपना देखती हूं कि सभी रात के समय बिना किसी डर के बाहर जा सकें।

– पारवती, फेमिनिस्ट लीडर, नार्थ दिल्ली

"मैं एक खुशमिज़ाज़ लड़की हूं,
मुझसे मेरी मुस्कान न छीनो।
किसी और के तरीके से चलना मुझे पसंद नहीं;
अपने तरीके से जीने दो।"

हमारे समाज में बच्चे, बुजुर्ग, पुरुष और महिलाएं सुरक्षित नहीं रह सकते। ऐसे स्थान जैसे बस स्टॉप, नुक्कड़ और सुनसान इलाके हमेशा खतरों से भरे रहते हैं। हमें लड़कियों और महिलाओं को शिक्षा और आत्म–सुरक्षा के लिए प्रेरित करना चाहिए।

महिला सुरक्षा की बात करते समय हमें शारीरिक और मानसिक पहलुओं पर ध्यान देना चाहिए। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में उन्हें तैयार करना आवश्यक है।

– अंजलि, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, नार्थ दिल्ली

फेमिनिस्ट लीडर्स, साउथ कोलकाता

सार्वजनिक स्थलों पर चुनौतियाँ

आज़ाद किशोरी, फेमिनिस्ट लीडर्स, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनीस, साउथ दिल्ली

मैन फॉर जेंडर जस्टिस, दिल्ली

सुरक्षित दिल्ली

कैब और रिक्शा चालक महिलाओं की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि उनकी क्षमताओं का सही उपयोग किया जाए, तो सार्वजनिक स्थलों पर महिलाओं के खिलाफ अपराधों में कमी लाई जा सकती है।

–सुमित्रा, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ दिल्ली

सार्वजनिक स्थलों पर चुनौतियाँ

आज़ादी की निडर उड़ान

हे नारी, तू कहीं नहीं सुरक्षित
फुटपाथ से लेकर बस स्टॉप तक,
कार्यस्थल से सुनसान राहों तक।
तू सोचती है तेरा पहनावा गलत है,
पर न देख पाती इस दुनिया की गलत नज़रें।
हे नारी, क्या बैठी है सोचकर?
कैसी होनी चाहिए यह दुनिया?
सोचती हूँ, मैं ऐसी नारी बनूँ,
जो निडर होकर फुटपाथ से बस स्टॉप तक चले।
ऐसा हौसला रखूं कि सुनसान राहों पर भी
बेखौफ चलूं।
मैं भी हूँ तैयार,
हौसलों की उड़ान भरने को,
और फिर बनूंगी आत्मनिर्भर।
तू भी नारी, मैं भी नारी,
हम साथ मिलकर भरेंगे आज़ादी की उड़ान!

– अंजलि, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, ईस्ट दिल्ली

गर्व से जीना

तुम बार-बार दूसरों की बातों से खुद पर शक करती हो,
सोचती हो, "क्या मैं अच्छी लड़की नहीं?"
जान लो, यही संदेह तुम्हारे आत्मविश्वास को तोड़ता है।
दुनिया चाहे जो कहे, तुम्हें खुद पर विश्वास होना चाहिए।
लड़की होना गर्व की बात है;
तुम्हें अपने आप पर गर्व होना चाहिए।
जज करने वाले कौन होते हैं?
इस दुनिया की बातों में मत आना।
तुम जैसी हो, पूरी तरह से परफेक्ट हो।
तुम मम्मी-पापा की जान हो,
दुनिया की शान हो।

–खुशबू, आज़ाद किशोरी, जयपुर

सुरक्षा की राह पर

सुरक्षा की राह पर चले हर नगर,
हर कोने में बसे खुशियों के रंग।
दोस्तों की हंसी, परिवार की आस,
सुरक्षित इस नगर में हो हर कोई खास।
"सुरक्षा सबका हक," यही है हमारी मांग,
यही है हमारी आषा, यही है विश्वास।

–आशा, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, जयपुर

ट्रांसजेंडर भी हैं बराबर सम्मान के हकदार

सुरक्षित शहर मैं ऐसी जगह को मानती हूँ जहाँ हर इंसान को बराबरी से जीने का हक़ को, खास कर हाशिय पर मौजूद लोग, जैसे की ट्रांसजेंडर समुदाय। ट्रांसजेंडर लोग भी इंसान हैं लेकिन हमारे समाज में उन्हें बहुत बुरी नज़र से देखा जाता है।

–गुलफ्सा परवीन, फेमिनिस्ट लीडर, नार्थ कोलकाता

वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, नार्थ कोलकाता

सार्वजनिक स्थलों पर चुनौतियाँ

लड़की के जन्म पर सवाल क्यों?

एक लड़की का जन्म हुआ – और तुम परेशान हो जाते हो, तुम्हें किस गर्भ ने जन्म दिया – क्या तुम्हारे पास इसका जवाब है?

तुम एक पुरुष के रूप में जन्मे, इसका ज़िम्मेदार कौन है? एक स्त्री के गर्भ से जन्म लेकर भी तुम उसे सताते हो। कौन लड़का बनेगा और कौन लड़की, इसके लिए स्त्री को दोषी क्यों ठहराते हो?

लड़की को जन्म देने के लिए स्त्री को क्यों दोष देते हो? जो पुरुष अत्याचार करता है, उसे अपने कर्मों का कानून के सामने जवाब देना होगा।

–पियू हाज़रा, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, नार्थ कोलकाता

बेहतर समाज का सपना

हमारा समाज एक बेहतर स्थान होता यदि कुछ चीजें बदलतीं। अगर लिंग आधारित भेदभाव न होता, तो समाज एक निष्पक्ष और न्यायपूर्ण स्थान होता। तब महिलाएं बिना छेड़खानी या ताने के डर के स्वतंत्रता से और सुरक्षित यात्रा कर पातीं।

–चंद्रा सरदार, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ कोलकाता

तन्नू, आज़ाद किशोरी, जयपुर

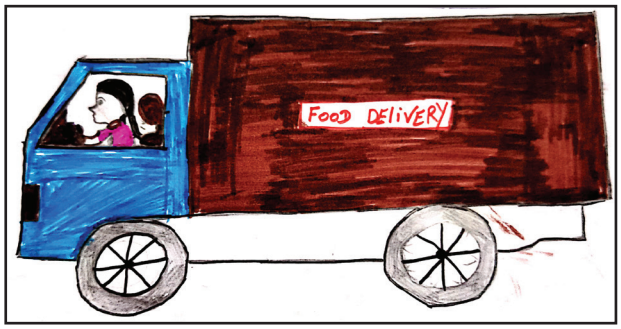

वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, नार्थ कोलकाता

बरशा सनफुई, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ कोलकाता

सभी का शहर, सभी की आवाज़ से

नारी

आज की नारी समझदार बन रही है,
सुनहरे भविष्य की ओर बढ़ रही है।
हर क्षेत्र में दे रही है मात,
पढ़ाई में सभी को प्रेरित कर रही है।

पर क्या सुरक्षित है नारी?
कभी सड़क पर, कभी बाजार में,
कभी काम पर, हमेशा डर के साये में,
छेड़छाड़ और यौन उत्पीड़न का सामना करती,
हमारा समाज उसका सम्मान भूल गया है।

उठो बहनों, डर-डर के जीना छोड़ दो,
आगे बढ़ो, जीवन में कुछ करो।

–सविता, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, ईस्ट दिल्ली

**सुरक्षा कर्तव्य हैं हमारा, सुरक्षित हो हर कार्य,
हमारी सुरक्षा का धर्म निभाना, सुरक्षित रोज घर जाना।**

–रेहमत जहान, आज़ाद किशोरी, ईस्ट दिल्ली

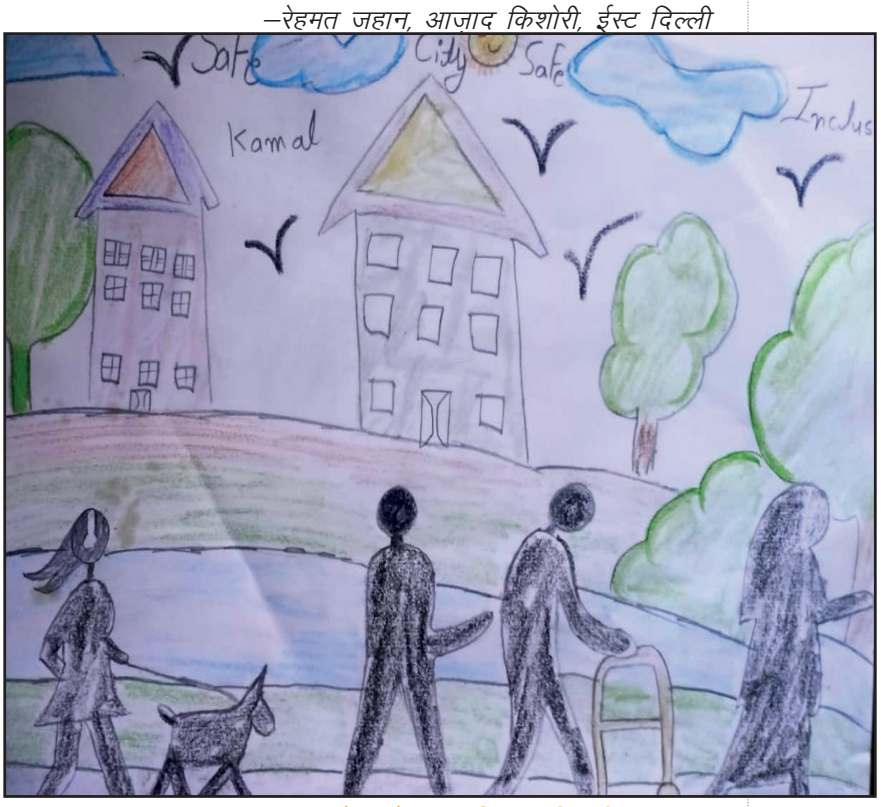

कमल, मेन जेंडर जस्टिस, दिल्ली

हमें अपने शहरों को सुरक्षित बनाना होगा

शहरों को सजाना-संवारना होगा,
प्रदूषण और असुरक्षा से बचाना होगा।

ट्रैफिक, भीड़, और अपराधों को हराकर,
शहरों को फिर से सुरक्षित बनाना होगा।

हरियाली अनदेखी, हवा में ज़हर घुला,
दमा, कैंसर जैसी बीमारियां पनपीं खुला।

पर्यावरण के प्रति प्रेम जगाना होगा,
शहरों में हरियाली को फिर लाना होगा।

शहरों ने जीवन आसान बनाया,
शिक्षा और चिकित्सा से हमें बचाया।

अब इन शहरों को फिर से बचाना होगा,
हमें अपने शहरों को सुरक्षित बनाना होगा।

–विक्रांत, मेन फॉर जेंडर जस्टिस, दिल्ली

नारी की नई पहचान

नहीं सहना अत्याचार,
महिला सषक्तीकरण का यही है विचार।
महिला अबला नहीं, सबला है,
जीवन जीने का यह उसका फैसला है।
महिलाओं को सषक्त करना है,
मानवता में नया रंग भरना है।
महिलाओं ने ठाना है,
सषक्तीकरण को अपनाना है।
महिलाएं देष को आगे बढ़ाती हैं,
समाज को तरक्की की राह पर लाती हैं।
हर कुरितियों से लड़ रही हैं,
खुषबू की तरह फैल रही हैं।

–खुशबू, आज़ाद किशोरी, साउथ दिल्ली

सभी का शहर, सभी की आवाज़ से

दिव्या, आज़ाद किशोरी, नार्थ दिल्ली

सुरक्षित और स्वच्छ शहर, हमारी जिम्मेदारी

- अपने आस–पास सफाई सुनिश्चित करें।
- पुलिस के सहयोग से सफाई व्यवस्था को बेहतर बनाया जा सकता है।
- दुर्घटनाओं को रोकने के लिए जगह–जगह स्पीड ब्रेकर लगाएं।
- महिलाओं का सम्मान करें और दुव्यवहार न करें।
- चोरी रोकने के लिए सुरक्षा कैमरे लगाएं।
- संदिग्ध गतिविधियों पर पुलिस को सूचित करें।
- सभी बच्चों को शिक्षा देकर शहर के विकास और उन्नति में योगदान करें।

–सचिन, मेन फॉर जेंडर जस्टिस, दिल्ली

बदलाव

- कन्या भ्रूण हत्याः को रोका जाए तो कई चीजें बदल सकती हैं।
- बाल–विवाहः इसे पूरी तरह से रोकना चाहिए।
- शिक्षाः लड़कियों को अच्छी शिक्षा दी जानी चाहिए, जिससे वे अपने निर्णय स्वयं ले सकें।
- समानताः लड़के और लड़कियों को समान समझकर शिक्षा देना आवश्यक है। जो काम लड़के कर सकते हैं, वही लड़कियाँ भी कर सकती हैं।
- पुलिस व्यवस्थाः इसे मजबूत करना चाहिए ताकि लड़के चौक पर खड़े होकर बदमाशी या छेड़छाड़ न कर सकें। जब माहौल सुरक्षित होगा, तभी लोग सुरक्षा महसूस करेंगे।
- सहायताः महिलाओं को परेशानी होने पर महिला हेल्पलाइन पर फोन करके मदद लेनी चाहिए।

– किरण, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, नार्थ दिल्ली

नये सवेरे की ओर

बाल विवाह पर रोक लगाने से शहर सुरक्षित होगा।

ट्रांसजेंडर को इज़्ज़त देने, नौकरियों में लाने और हर अवसर प्रदान करने से शहर सुरक्षित होगा

वायु प्रदुषण पर रोक लगाने से शहर सुरक्षित होगा।

बाल श्रम पर रोक लगाने से शहर सुरक्षित होगा पेड़ों को न काटने से शहर सुरक्षित होगा।

–शबाना खातून, फेमिनिस्ट लीडर, नार्थ कोलकाता

मेरा शहर

सड़कों पर रोशनी से सजावट होगी – शहर को सुरक्षित और मजबूत बनाएगी। सार्वजनिक जगहों पर सुरक्षित रूप से टहलेंगे, हर उम्र के लोग होंगे इसमें शामिल। लड़के और लड़कियां सुरक्षित खेलेंगे, बड़े–बुजुर्ग खुशियों के पल बांटेंगे। शिक्षा और रोजगार के अवसर भी होंगे। कोई भी अकेला नहीं होगा, जाति, वर्ग, और धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं होगा। हम सब मिलकर अपने शहर को सुरक्षित बनाएंगे,आइए, इस संकल्प को लें।

–सोहम शी, मेन फॉर जेंडर जस्टिस, कोलकाता

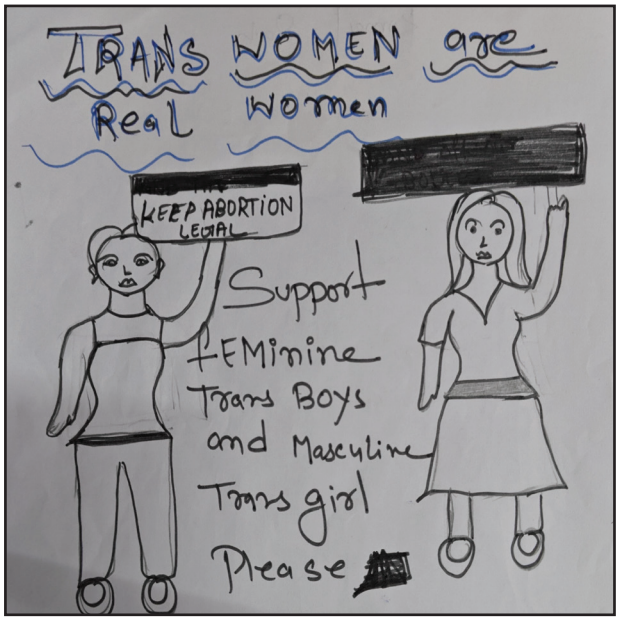

कोमल शाह, फेमिनिस्ट लीडर, नार्थ कोलकाता

सभी का शहर, सभी की आवाज़ से

एक सुरक्षित समाज की आवश्यकता

जब हम, महिलाएं, सड़कों पर गाड़ी चलाती हैं, तो लोग अपमानजनक टिप्पणियाँ करते हैं, जो तुरंत बदलनी चाहिए। कई मामलों में, सार्वजनिक और निजी दोनों जगहों पर उत्पीड़न होता है। यदि ये सब रुक जाएं, तो हम और अधिक सुरक्षित महसूस करेंगी।

–पाम्पा नस्कर, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ कोलकाता

मेरा सुरक्षित शहर

जब मैं स्कूल जाती थी, लड़कियों के बाथरूम कभी साफ नहीं होते थे, जिससे असुरक्षा का अहसास होता था। जब महिलाओं के खिलाफ अपराध होते हैं, तो तुरंत कार्रवाई नहीं होती। जब महिलाएं अपनी पसंद का पहनावा पहनती हैं, तो पुरुष घूरते हैं और टिप्पणी करते हैं। मैं चाहती हूं कि हमारे शहर के सरकारी स्कूलों में लड़कियों के लिए सुरक्षित और साफ बाथरूम हों। महिलाओं के खिलाफ अपराध होने पर तुरंत और कड़ी सजा दी जानी चाहिए। महिलाओं को अपनी पसंद के कपड़े पहनने की स्वतंत्रता होनी चाहिए, और किसी को भी उन पर टिप्पणी नहीं करनी चाहिए। सभी सार्वजनिक परिवहन में बुजुर्गों और विकलांग लोगों के लिए सुविधाएं होनी चाहिए। महिलाओं को बिना डर के जीवन जीने का अधिकार होना चाहिए, और सार्वजनिक सेवक अपनी जिम्मेदारियों को ईमानदारी से निभाएं ताकि हमारे अधिकार और शिकायतें सुनी जा सकें।

–माला, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, चेन्नई

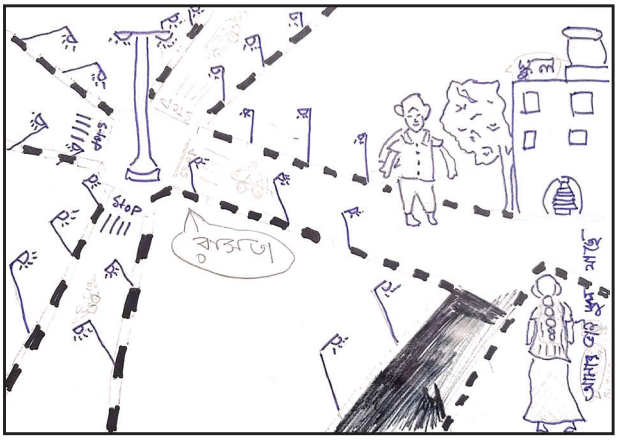

आशिष नशकर, मेन फॉन जेंडर जस्टिस, कोलकाता

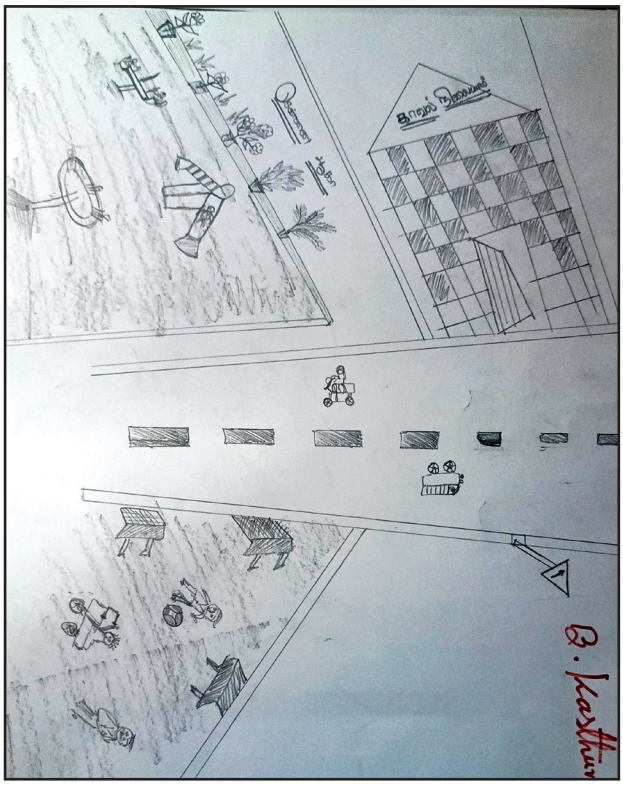

कस्तूरी, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, चैन्नई

सुरक्षित शहर, उज्ज्वल भविष्य

सुरक्षित शहर वही है जहाँ महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित हो। हर चौराहे पर पुलिस की तैनाती हो ताकि महिलाओं को परेशान करने वालों को रोका जा सके। शहर की गलियों में पर्याप्त रोशनी और हर घर में बिजली होनी चाहिए। विकलांगों के लिए विशेष सुविधाएं उपलब्ध हों ताकि वे सहज जीवन जी सकें।

–अर्जुन, मेन फॉर जेंडर जस्टिस, दिल्ली

मजबूत नारी से ही बनेगा मजबूत समाज!

–भावना, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, ईस्ट दिल्ली

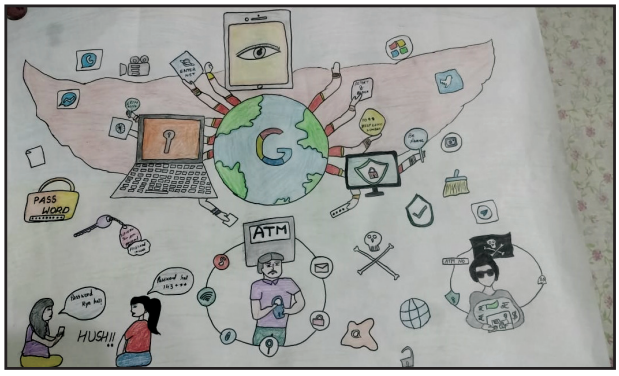

रश्मि, आज़ाद किशोरी, जयपुर

सभी का शहर, सभी की आवाज़ से

बंदिशों से परे

हम न मानें किसी बंधन को, न मानें किसी
रोक-टोक को।
हम मानें अपने सुरक्षित स्थान को,
जहां हो सम्मान और अधिकार।
रात के अंधेरे में निकलें,
अकेले बिना किसी डर के,
जैसे मैं एक सुरक्षित जगह की तितली।

– मौसमी दास, फेमिनिस्ट लीडर, साउथ कोलकाता

सुरक्षित शहर – सबका शहर

एक सुरक्षित शहर में सभी को समान अधिकारों का आनंद मिलेगा, शिक्षा सभी के लिए सुलभ होगी, और सभी लोगों के साथ समान व्यवहार किया जाएगा। समाज हिंसा–मुक्त होगा और विशेष रूप से महिलाओं पर कोई हिंसा नहीं होगी।

–जीशु बैद्य, मेन फॉर जेंडर जस्टिस, कोलकाता

आदित्य साहू, मेन फॉर जेंडर जस्टिस, कोलकाता

पाठकों के लिए विशेष सूचना: आप में से जो भी इस न्यूज़लेटर के लिए लिखना चाहते हैं, अपनी कहानी, कोई रोचक अनुभव, सन्देश या ख़ास खबर, चित्र, फोटो, शेर–ओ–शायरी, गीत–चुटकुला, विचार या चिंताएं सबके साथ बांटना चाहते हैं तो नीचे दिए पते पर संपर्क करें।

संपादक: शिखा डिमरी **अन्य सहयोगी:** अनामित्रा मुख़र्जी

आर–10, फ्लैट नं. 7, दूसरी मंज़िल, नेहरू एन्क्लेव,
कालका जी, नई दिल्ली–110019
फोन: 011-49053796 • वेबसाइट: www.azadfoundation.com

-: डिस्क्लेमर :-

आज़ाद फाउण्डेशन और सखा दो अलग-अलग संस्थाएँ हैं।
आज़ाद एक एन.जी.ओ. है और सखा एक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी।

मेरी सुरक्षा, मेरा अधिकार:

महिला सुरक्षा की जिम्मेदारी हम सबकी साझेदारी;
महिलाओं को मिले सम्मान, सुरक्षित शहर की यह पहचान!

–आज़ाद किशोरी, फेमिनिस्ट लीडर्स, ट्रेनी, साउथ दिल्ली

एक बेहतर शहर की परिकल्पना

- वरिष्ठ नागरिकों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
- विकलांग व्यक्तियों को आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
- महिलाओं को आत्मविश्वास महसूस करना चाहिए और सुरक्षित रहना चाहिए।
- जब हम अपनी राय व्यक्त करें, तो हमें सुना जाना और सम्मान दिया जाना चाहिए।
- जब महिलाएं बस से यात्रा करें, तो उन्हें बिना डर के यात्रा करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।

–गजलक्ष्मी, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, चेन्नई

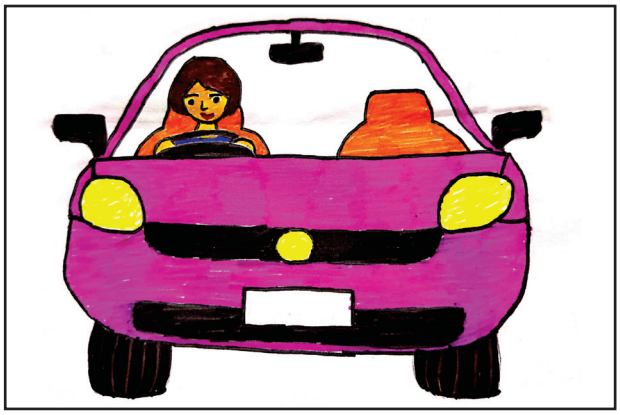

वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, नार्थ कालकाता

हेल्पलाइन नंबर

पुलिस (आपातकालीन) फोन नंबर	–	100 / 112
अग्निशामक (फायर ब्रिगेड) फोन नंबर	–	101
एम्बुलेंस फोन नंबर	–	102
महिला और बाल विकास मंत्रालय फोन नंबर	–	1091
महिला हेल्पलाइन फोन नंबर	–	181
बाल हेल्पलाइन फोन नंबर	–	1098

KNOW MORE www.azadfoundation.com
@azadfoundationIndia
@azadfoundationIndia
@FoundationAzad